शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों की सामाजिक संवेगात्मक समस्याएं व हल – अध्यापन के सन्दर्भ में

विकास कुमार दम्माणी[1] डॉ.वासंती मैथ्यू[2]
[1,2]आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

I प्रस्तावना

एक अध्यापक चाहे वह किसी भी निजी या सार्वजनिक स्कूल की शिक्षा से संबंधित रहा हो, किसी ना किसी रूप में शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों के संपर्क अवश्य रहा होगा, विकलांग विद्यार्थी के समक्ष अनेक सामाजिक समस्याए आती है जिनका प्रभाव उसके अध्ययन पर पड़ता है। इन समस्याओं को यदि समय रहते ध्यान देकर हल किया जाय तो विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियों की भांति अध्ययन कर सार्थक रूप से जीवन जी सकता है।

II शारीरिक रूप से अक्षम (दैव्यांग) विद्यार्थियों की समस्याएं एक दृष्टि में

(क) दैव्यांगता की भावनात्मक समस्या

किसी भी प्रकार की शारीरिक अक्षमता (दैव्यांगता) के कारण लोगों के मन में उपेक्षा की भावना बैठ जाती है। इस कारण दैव्यांग व्यक्ति समाज द्वारा स्वीकार नहीं किए जाते है। लोग उनकी योग्यताओं के बजाय अयोग्यताओं पर विशेष ध्यान देते हैं। इसके कारण दैव्यांग व्यक्ति, शेष समुदाय से कट जाते है और अलग थलग रहने लगते है, ये भावना स्थान–स्थान के अनुसार बदलती रहती है, विकसित देशों की तुलना में भारत में दैव्यांग व्यक्ति पर यह भावना अधिक गहरी दिखाई देती है समाज का यह दृष्टिकोण दैव्यांग व्यक्तियों की समाज के साथ एकता में बाधक होता है।

देखा गया है कि दैव्यांग विद्यार्थी की समाज प्रायः उपेक्षा करता है। समाज ही उपेक्षा नहीं करता, दैव्यांगता स्वयं उस दैव्यांग विद्यार्थी की आत्मधारणा को प्रभावित करती है, भले ही प्रभावित करने वाले कुछ अन्य कारण भी हो सकते है तब वे समझने लगते हैं कि समाज में रहने लायक नहीं और समाज से अपने कटा–कटा से मानने लगते हैं।

(ख) घर, विद्यालय समाज में नकारात्मक अनुभव की समस्या

दैव्यांग विद्यार्थी में दैव्यांगता के कारण उसे घर, विद्यालय, समाज सभी जगह नकारात्मक अनुभवों का सामना करना पड़ता है लोगों को अन्य सामान्य विद्यार्थियों को जब दैव्यांग वद्यार्थियों के दोष स्पष्ट नजर आते है तो उनमें दैव्यांग विद्यार्थियों के प्रति तिरस्कार की भावना जाग उठती है विद्यार्थी भी अपनी अक्षमता को छिपाने का प्रयास करता है इसी कारण वह विद्यार्थी बैसाखी के उपयोग, चश्मा लगाने और कान में श्रवण–यंत्र के उपयोग से कतराने लगता है, भले ही इनका उपपयोग न करने से उसे कार्य संचालन में बाधा आती हो। अपने बच्चों की दैव्यांगता के दोषों को छिपाने का प्रयास कभी माता–पिता भी करते है वे अपने बच्चों को दूसरों के प्रतिकुल व्यवहार से दूर रखना चाहते है या फिर वे स्वयं अपनी विकृत संतान में शर्मिंदा है। इससे दैव्यांग विद्यार्थी को और अधिक शर्मिंदगी उठानी पड़ती है, जिससे वह कई भावनात्मक विद्यार्थी को और अधिक शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है, जिससे वह कई भावनात्मक आघात और मनोवैज्ञानिक विकारो से पीड़ित रहने लगता है जैसे : अनिंद्र, भूख की कमी, धीरे–धीरे ज़ीवन में रूचि का घटना, परिवार व स्वंय के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, चिंता मन में भावनात्मक उतार चढ़ाव आदि।

(ग) अध्यापक/माता–पिता का पक्षपातपूर्ण व्यवहार की समस्या

कई बार अध्यापक, माता–पिता के पक्षपातपूर्ण व्यवहार के कारण दैव्यांग विद्यार्थियों में अपने उन सहपाठियों, भाई बहनों के प्रति ईष्या की भावना विकसित हो जाती है, जिनके बारे में वे सोचते हैं माता–पिता, अध्यापक उनके साथ हमारी तुलना में अधिक अच्छा बर्ताव करते है।

(घ) उपयुक्त वातावरण की समस्या

घर में, विद्यालय में निरन्तर बहिष्कार का वातावरण गम्भीर विपरीत परिस्थितियों को जन्म दे सकता है। एक दैव्यांग बच्चा माता–पिता के बीच कलह की जड़ भी बन सकता है। उसकी कमियों के लिये दोनो एक दूसरे पर दोषारोपण कर सकते है, माता–पिता की ऐसी फुट तथा भाईयों बहनों की विकलांग व्यक्ति के प्रति अरूचि से उस व्यक्ति में हीनता की भावना और अधिक तीव्र हो जाती है।

कक्षा में अध्यापक का तनिक भी असंतुलित या उपेक्षित व्यवहार दैव्यांग विद्यार्थी को हीनभावना से ग्रसित व परेशान कर सकता है। विद्यार्थी में समाज विरोधी व्यवहार जैसे चिडचिड़पान, आपा खो देना, आक्रमकता आदि दिखाई देने लगते हैं।

(च) शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थी में नकारात्मक मूल्याकंन का भय

व्यक्ति को उन सभी पक्षों के बारे में जिनकी उसे जानकारी हैं, अपनी योग्यता और सीमाओं का मूल्याकंन स्वयं के प्रति धारणा को बताता है। "जीवन जीने योग्य है, इसे जियो" इसबात का अनुभव करने के लिए व्यक्ति को स्वयं के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

स्वयं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के निर्माण के लिये मुख्यतः अध्यापक उत्तरदायी है क्योंकि माता–पिता का काफी समय परिवार की अन्य बातों में व आजीविका कमाने में व्यतीत होता है।

दैव्यांग विद्यार्थियों को अपने नकारात्मक मूल्याकंन के संकेत प्राप्त होते है प्रायः यह बताया जाता हैं कि उनके हालात दूसरो से भिन्न है अक्सर अध्यापक उसकी दैव्यांगता पर ध्यान देते है और टिप्पणी करते है, जैसे "तुम इसे नहीं कर सकते हो" या अमुक काम करना तुम्हारे वश का नहीं है" आदि इससे उसका नकारात्मक मूल्याकंन होता है और उसमें आत्मविश्वास कम होता है, आत्मविश्वास कम होने से वह कटा–कटा सा महसूस करने लगता है।

(छ) तकनीकी कौशल वाले पाठयक्रमों में समस्या

अकसर शारीरिक दैव्यांगता वाले विद्यार्थियों को तकनीक पाठयक्रमों में कौशलपूर्ण कार्यो के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है, इससे भी दैव्यांग विद्यार्थी अनेक प्रकार की कुंठाओं से ग्रसित हो सकते है।

यदि दैव्यांग विद्यार्थियों की सुरक्षा के उचित उपाय किए जाय और उनके संभावित खतरों से बचाया जाय तो वे सामान्य विद्यार्थियों से अच्छा कर सकते है।

III दैव्यांग विद्यार्थियों की सामाजिक संवेगात्मक समस्याए के हल (अध्यापक व्यवहार के सन्दर्भ में)

(क) दैव्यांग या शारीरिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को निराशा या परास्त हुए बिना अपनी सीमाओं को स्वीकार करने व अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

(ख) दैव्यांग विद्यार्थियों को खेल बैठक आदि के लिये प्रोत्साहित करते रहें। खेल, बैठक आदि समाजीकरण के सर्वाधिक शक्तिशाली साधनों में से एक है।

(ग) दैव्यांग विद्यार्थियों के प्रति विचारशील व पूर्वाग्रहरित दृष्टिकोण उनकी आत्मनिर्भता और आत्मसिद्धी में सहायता करेगा।

(घ) अध्यापकों को चाहिये कि विद्यालय में अक्षम विद्यार्थियों हेतु ढलान वाली सीढ़ियां, चौड़े दरवाजे, अलार्म या नीची बैठक व्यवस्था उपलब्ध करवाने का प्रयास करे।

(च) दैव्यांग विद्यार्थियों हेतु ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करे कि अक्षम विद्यार्थी सृजनशील बन सके।

(छ) अध्यापक को चाहिए कि दैव्यांग विद्यार्थियों से संतुलित व्यवहार करे, ना तो उनके अति सहानुभूति, रक्षण का व्यवहार करे और ना ही अपेक्षा का व्यवहार करे।

(ज) दैव्यांग विद्यार्थियों की भावनात्मक व्यवहार से जुड़ी समस्याओं के समाधन हेतु दंड और बल का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(झ) अक्षम विद्यार्थियों हेतु मिलनसारिता की भावना विकसित करने हेतु सामाजिक कार्यकलापों का आयोजन करना चाहिए।

(ट) दैव्यांग विद्यार्थियों व उनके माता–पिता का विश्वास अर्जित करने का प्रयास अध्यापक को करना चाहिए।

(ठ) समय–समय पर अक्षम विद्यार्थियों के माता–पिता से मिलकर उनकी (विद्यार्थी) की समस्याओं को जानने का प्रयत्न करना चाहिए।

(ड) दैव्यांग विद्यार्थियों को विभिन्न समस्याओं को जानने व उनके हल जानने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।

(ढ) दैव्यांग बच्चों के पालन पोषण के संबंध में माता–पिता को सहायता पुस्तके व सामग्री उपलब्ध करवाने का प्रयास अध्यापक को करना चाहिए।

(त) अवकाश की अवधि में विकलांग बच्चों को अन्य रचनात्मक कार्यो में व्यस्त रखने के बारे में अभिभावको की जानकारी बढ़ाना।

IV विषय पर पूर्व प्रकाशित शोध

दैव्यांगता के कारणों, लक्षण, प्रभाव पर तो पर्याप्त शोध कार्य हुआ है, परन्तु दैव्यांग विद्यार्थियों की सामाजिक संवेगात्मक समस्याओं व उनके हल पर शोध कार्य अत्यंत अल्प है, साथ ही अध्यापक की भूमिका का अध्ययन का शोध कार्य लगभग ना के बराबर है।

V शोध कार्य का उद्देश्य

दैव्यांग विद्यार्थियों, विद्यालयीन जीवन में उचित व्यवहार मिले यदि उन्हें किसी भी समस्या खासकर सामाजिक, संवेगात्मक हो तो, उसे पर्याप्य रूप से जानकर दूर कर सके यही शोधपत्र का उद्देश्य है।

VI शोध अध्ययन की विधि तथा प्रभाव

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक संमकों व सुचनाओं पर आधारित है प्राथमिक संमकों के रूप में शोधकर्ता ने स्वयं अपने आसपास के क्षेत्र, नजदीकी जिलों के सार्वजनिक (शासकीय) व निजी विद्यालयों में जाकर अध्ययन किया। समस्याओं को समझ कर उन्हें उपयुक्त शीर्षकों में वर्गीकृत करके अवलोकन चर्चा, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर हल प्रस्तुत किये है। आवश्यकतानुसार द्वितीयक संमकों का भी उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र दैव्यांग विद्यार्थियों की समस्याओं को, व्यवहार को समझने में सहायता करेगा इससे उनके विद्यार्थी जीवन में सरलता आयेगी और समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने में सहायक होगा।

सन्दर्भ

[1] केथरीन एस फीचेन विकलांग और ई–लर्निंग समस्याएं और समाधानः एक खोजपूर्ण अध्ययन।

[2] सिंघल, निधि 2006, "भारत में समावेशी शिक्षाः अंतर्राष्ट्रीय संकल्पना, राष्ट्रीय व्याख्या।

[3] मेहरोत्रा, नीलिका 2004, "महिलाओं, विकलांगता, और ग्रामीण हरियाणा में सामाजिक सहायता" आर्थिक और राजनीनिक साप्ताहिक –39 (52): 5640

[4] हैरिस व्हाइट, बी (1996), विकलांगता और विकास की राजनीतिक अर्थव्यवस्था : के विशेष संदर्भ में इंडिया।

[5] मैथर्स सी डी, इमवर्ग केएम, बेग एस : स्वस्थ जीवन प्रत्याशा की गणना में निर्भर बव उवतइपकपजल के लिए समायोजन। जनसंख्या स्वास्थ्य मेट्रिक्स 2006।

[6] Data and statistics: country groups. Washington, World Bank, 2004 (http://go.worldbank.org/D7SN0B8YU0, accessed 4 January 2010).

[7] World Report on Disability: 2011.